International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN:2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 04(I), October-December, 2026, pp. 54-60

चीन की जल–डेटा साझाकरण नीति : ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन में भारत और बांग्लादेश की मानव सुरक्षा चुनौतियों का अध्ययन

रितिक[1*] | डॉ. सुनील कुमार जांगिड़[2] | डॉ. कपिल कुमार आनंद[3]

[1]रिसर्च स्कॉलर, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर राजस्थान।
[2]मुख्य गाइड–प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर राजस्थान।
[3]को–गाइड – सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, एस.एस. जैन सुबोध पी.जी. कॉलेज, जयपुर।

[*]Corresponding Author: ritik892920@gmail.com

Citation: रितिक, जांगिड़, सुनीत एवं आनंद, कपिल (2026). चीन की जल–डेटा साझाकरण नीति : ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन में भारत और बांग्लादेश की मानव सुरक्षा चुनौतियों का अध्ययन. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(04(I)), 54–60. https://doi.org/10.62823/IJEMMASSS/8.4(I).9645

सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन नदी (जल) डेटा की राजनीति से संदर्भित है जो चीन की जल डेटा साझा में कमी के कारण भारत और बांग्लादेश की सुरक्षा और आपदा प्रबंधन पर प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है। इस शोध का प्राथमिक लक्ष्य, ऊपर तटवर्ती वाले देशो पर निचले तटवर्ती वाले देशों की नदी (जल) डेटा साझा हेतु निर्भरता को समझना है। भारत और बांग्लादेश, चीन की तुलना में नीचे तटवर्ती अर्थात् दक्षिण एशिया में आते हैं और चीन द्वारा जल डेटा साझा में कमी करने के कारण इन देशों पर बाढ़ जैसी बड़ी प्राकृतिक आपदा का खतरा बना रहता है। ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन और इसकी सहायक नदियाँ भारत, चीन और बांग्लादेश से होकर बहती हैं। ब्रह्मपुत्र नदी विश्व की सबसे बड़ी नदियों में से एक है जिसका आरंभिक क्षेत्र चीन है। चीन के द्वारा इन नदियों का डाटा साझा न करने पर भारत के पूर्वी क्षेत्र और बांग्लादेश जैसे निचले तटवर्ती वाले देशों पर विशेषकर मानसून के महीने में नदियों के जल स्तर का कोई भी डाटा उपलब्ध नहीं होता है जिसके कारण अचानक आने वाली बाढ़ से भारत और बांग्लादेश के क्षेत्र में बड़ी हानि पहुँचाती है। इस अचानक आने वाली बाढ़ से भारत और बांग्लादेश दोनों देशों के आपदा प्रबंधन की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। भारत और चीन के बीच इन नदियों के डेटा साझा करने हेतु 2002 में डवने समझौता हुआ इस समझौते के तहत् चीन अपने क्षेत्र से भारत की ओर बहने वाली नदियों का डाटा भारत को साझा करेगा। जिसमें ब्रह्मपुत्र नदी और उसकी सहायक नदियों से संबंधित यह डाटा प्रत्येक वर्ष मई से अक्टूबर तक का देने के लिए चीन ने सहमति जताई। भारत और चीन के बीच हुए इस समझौते का समय–समय पर नवीनीकरण भी किया गया, परंतु चीन ने डोकलाम संघर्ष के समय भारत को नदियों से संबंधित जल डाटा साझा करना बंद कर दिया जिसके कारण भारत और बांग्लादेश का नदियों से संबंधित जल स्तर का अनुमान लगाना कठिन हो गया जिसके कारण मानव सुरक्षा के लिए खतरा बढ़ गया। नदियों का डाटा ना होने के कारण आने वाली बाढ़ से आपदा प्रबंधन की असमर्थता बढ़ जाती है भारत और बांग्लादेश के क्षेत्रों और क्षेत्रवासियों को काफी बड़े स्तर पर हानि का सामना करना पड़ता है चीन द्वारा जल नदी डाटा साझा करने की कमी से भारत और चीन के बीच क्षेत्रीय सहयोग और विश्वास में कमी आई । अतः चीन ने अपनी इस भौगोलिक स्थिति को भारत के खिलाफ एक रणनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया है।

शब्दकोशः *जल डाटा की राजनीति, ब्रह्मपुत्र नदी, भारत–बांग्लादेश में बाढ़ के चेतावनी, MOUs समझौते, आपदा प्रबंधन, मानव सुरक्षा, डाटा साझा में कमी, चीन की जल कूटनीति।*

Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.

प्रस्तावना

विश्व स्तर पर जलवायु परिवर्तन के दौर में जल संसाधन प्राकृतिक संपदा तक सीमित नहीं रहा बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण उपकरण की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है। विश्व में जल प्राकृतिक संसाधन नहीं रहा बल्कि यह निचले तटवर्ती देश के लिए एक समस्या बन गया है। ब्रह्मपुत्र नदी और इसकी सहायक नदियां जो चीन से होकर पूर्वी भारत और बांग्लादेश में बहती है चीन द्वारा इन नदियों के संबंध में डेटा साझा में कमी करने से मानसून के समय भारत के पूर्वी क्षेत्र और बांग्लादेश में बाढ़ आने की पूरी सूचना उपलब्ध नहीं होती। मानसून के समय पर नदी के जल स्तर की सूचना न मिलने पर भारत और बांग्लादेश जैसे क्षेत्रों में अचानक आने वाली बाढ़ से काफी ज्यादा हानि होती है। अगर निचले तटवर्ती देशों के पास बाढ़ आने से पहले नदी के जल प्रवाह की सूचना होती तो बाढ़ के समय उन देशों को कम से कम हानि होती और मानव सुरक्षा भी बनी रहती।

एशिया में ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर चीन जल संसाधन को एक प्राकृतिक संसाधन के रूप में नहीं देखता है। चीन इसे अपने हितों और शर्तों को मनवाने के लिए एक साधन के रूप में देखता है। जिसका इस्तेमाल चीन कमजोर देश और आर्थिक रूप से पिछड़े देशों पर करता है। बीते कुछ सालों में देखे तो जल नदियों का मुद्दा पर्यावरण ना होकर विश्व राजनीति का एक अहम साधन बन गया है। जिसमें नियंत्रण ऊपरी तटवर्ती वाले देशों के पास होता है और निचले तटवर्ती वाले नदियों के संबंध में डाटा साझा और अन्य सहयोग के लिए ऊपरी तटवर्ती वाले देशों पर निर्भर रहना पड़ता है। सीधे शब्दों में कहे तो जल एक प्राकृतिक साधन है जिसमें निचले तटवर्ती वाले देशों को समान अधिकार प्राप्त नहीं होते नियंत्रण ऊपरी तटवर्ती वाले देशों पर रहता है।[1] चीन भारत को ब्रह्मपुत्र नदी के संबंध में ना तो सूचना साझा करता है ना ही नदी सहयोग करता है जबकि चीन कजाखस्तान को इली और ईर तीश नदी पर पूर्ण उपयोग करता है अर्थात् जल नदी के संबंध में अपने पड़ोसी देशों के साथ समान व्यवहार नहीं करता है।[2] चीन को जिन देशों से अपना लाभहित नहीं होता उन्हें वह सहयोग नहीं करता तो जिन देशों से विवाद संघर्ष चल रहा होता है उन देशों के खिलाफ चीन नदी प्राकृतिक संसाधन वह अन्य संसाधनों को एक राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करता है।

ब्रह्मपुत्र नदी भारत और चीन के बीच में एक विवाद का कारण बन गई है क्योंकि चीन पहले तो नदी से संबंधित डाटा साझा में कमी करता है वहीं दूसरी ओर चीन इस ब्रह्मपुत्र नदी पर बांध बनाने की परियोजना को तैयार कर रहा है। इस परियोजना ने भारत की चिंता को और अधिक बढ़ा दिया है क्योंकि यह नदी चीन के तिब्बत से होकर भारत और बांग्लादेश में बहती है जो पूर्वी भारत में पानी की कमी को पूरा करती है। अगर चीन का इस नदी पर पूर्ण नियंत्रण होगा तो चीन इसे भारत के विरूद्ध एक राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल कर सकता है जिससे भारत के पूर्वी क्षेत्र में कभी बाढ़ या कभी सूखा जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है।[3] जिसके कारण ब्रह्मपुत्र नदी का संघर्ष भारत के लिए दो तरफ समस्या बना हुआ है।

नई दिल्ली में जल संसाधन नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के अधिकारियों के अनुसार भारत और चीन के बीच एक समझौता ज्ञापन (MoUs) पर हस्ताक्षर हुए जिसके तहत् चीन प्रत्येक वर्ष 15 मई से 15 अक्टूबर तक भारत को नदी के प्रवाह की सूचना देगा। यह डाटा भारत और बांग्लादेश में बाढ़ नियंत्रण योजना बनाने के लिए अति महत्वपूर्ण था। इस समझौते के पश्चात् एशियाई देशों में चीन के प्रति एक सहयोग की भावना बड़ी। साथ ही अधिकारियों ने यह बताया कि मंत्रालय को ब्रह्मपुत्र नदी और बराक नदी का महत्वपूर्ण डाटा मिलना शुरू हो गया है।[4] वर्ष 2017 में दोनों देशों के बीच समस्या जब बढ़ी जब चीन ने नदी संबंधित उत्तर देना बंद कर दिया चीन ने हिमालय क्षेत्र डोकलाम विवाद के कारण भारत के खिलाफ यह कदम उठाया था। परंतु चीन ने ही दावा किया कि यह कदम जल प्रवाह मापन केंद्र के आधुनिकरण अपग्रेडिंग सिस्टम के लिए उठाया गया था।

साहित्य समीक्षा

अरूण, पी. ऐलहेन्स (1999) ने अपनी पुस्तक हाइड्रोपोलिटिस इन द वर्ल्ड में यह तर्क दिया है कि जन संसाधन का मुद्दा पर्यावरण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह विश्व राजनीति में ऊपरी तटवर्ती देशों के लिए अपने राष्ट्रीय हितों को पूरा करने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। जिसके कारण प्राकृतिक संसाधनों को लेकर ऊपरी तटवर्ती वाले और निचले तटवर्ती वाले देशों के बीच असमानता दिखाई देती है। दूसरे शब्दों में कहे तो ऊपरी तटवर्ती वाले देशों की स्थिति निचली तटवर्ती वाले देशों की तुलना में काफी ज्यादा मजबूत होती है क्योंकि नदी के प्रवाह पर ऊपरी तटवर्ती वाले देशों के पास ही नियंत्रण होता है जिसके कारण निचले तटवर्ती वाले देशों को ऊपरी तटवर्ती वाले देशों की नीतियों और शर्तों को मानना पड़ता है।[5]

मार्क जेथेन, जेरोन वोहर (2006) ने वाटर पॉलिसी में सामान्य स्तर पर यह माना है कि भारत और चीन दोनों देशों के बीच आपसी सहयोग बढ़ रहा है परंतु वह इस बात को अनदेखा कर देते हैं कि सभी देशों के पास शक्ति बराबर नहीं होती है। जिन देशों के पास अधिक शक्ति होती है वह जल संसाधनों पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लेते हैं और पानी पर अपना वर्चस्व बना लेते हैं।[6]

सेलिना हो (2017) ने बताया कि चीन अपने पड़ोसी देश के साथ हमेशा असमान सहयोग की भावना रखता है। चीन किस देश को कितना सहयोग करेगा यह उस बात पर निर्भर करता है कि चीन को उसे देश से कितना लाभ प्राप्त हो रहा है, उदाहरण के लिए चीन कजाखस्तान के साथ इली और ईरतीश नदियों पर अधिक सहयोग करता है जबकि भारत को ब्रह्मपुत्र नदी पर सहयोग नहीं करता।[7]

मिर्जा (2011) ने अपने अध्ययन में बताया कि विश्व में सबसे अधिक बाढ़ दक्षिण एशिया में आती है इससे फसलों, जन, संपत्ति इत्यादि का काफी बड़े पैमाने पर नुकसान होता है भारत, बांग्लादेश और पाकिस्तान जैसे दक्षिणी एशियाई देशों में बाढ़ संभावित समस्याएं बड़े स्तर पर मौजूद है जैसे–जैसे जलवायु परिवर्तन हो रहा है वैसे–वैसे बाढ़ की संभावना भी बढ़ गई है जिसमें विशेष कर गंगा, ब्रह्मपुत्र व मेघना नदियों पर मानसून में बाढ़ जैसी परिस्थितियों बन जाती है। ऐसे में ऊपरी तटवर्ती वाले देशों के द्वारा नदी के प्रवाह की सूचना साझा नहीं करने से निचले तटवर्ती वाले देश को काफी ज्यादा नुकसान का सामना करना पड़ता है और निचले तटवर्ती वाले देशों की आपदा प्रबंधन प्रणाली क्षमता भी कमजोर होती है।[8]

उद्देश्य

चीन की जल–डेटा साझाकरण नीति : ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन में भारत और बांग्लादेश की मानव सुरक्षा चुनौतियों का अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है–

- चीन द्वारा जल डाटा साझा की नीति से भारत–बांग्लादेश की मानव सुरक्षा और आपदा प्रबंधन प्रणाली पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
- चीन की जल डाटा की राजनीति को समझना जिसमें चीन अपने निजी हितों की पूर्ति और दक्षिण एशिया में अपने प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए प्राकृतिक संसाधन जल को इस्तेमाल करता है।
- भारत और बांग्लादेश में चीन द्वारा जल डाटा साझा में कमी करने के कारण उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।

परिकल्पना

H_1 चीन द्वारा जल डाटा साझा में कमी करने के कारण भारत और बांग्लादेश की बाढ़ आपदा प्रबंधन क्षमता व बाढ़ चेतावनी प्रणाली की कार्य क्षमता में कमी आई। जिससे क्षेत्रीय मानवीय सुरक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

H_2 वैश्विक स्तर पर चीन की जल डाटा नीति चीन के लिए रणनीतिक उपकरण सबित हुई है जिसका उद्देश्य दक्षिण एशिया में शक्ति संतुलन को अपने पक्ष में निरंतर बनाए रखना है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति से संदर्भित है जिसमें चीन की जल डाटा साझा की राजनीति से भारत और बांग्लादेश पर प्रभावों का अध्ययन किया गया । शोध अध्ययन में चीन की एक तरफा राष्ट्रीय हित नीतियों, सरकारी नीतियों, अंतरराष्ट्रीय कानून और वैश्विक कुटनीतियों का विश्लेषण किया गया है।

डाटा के स्रोत

प्रस्तुत शोध अध्ययन "ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन में चीन की जल डाटा साझा नीति का भारत और बांग्लादेश की मानव सुरक्षा पर प्रभाव" में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है जो इस प्रकार है–

- प्राथमिक स्रोत के रूप में विभिन्न सरकारी वेबसाइटों से डाटा और आंकड़ों को एकत्रित किया गया है जिसमें मिनिस्ट्री आफ जल शक्ति, सेंट्रल वॉटर कमीशन तथा मिनिस्ट्री ऑफ़ एक्सटर्नल अफेयर्स शामिल है।
- द्वितीयक स्रोत के रूप में प्रमुख पुस्तक, शोधपत्रिकाएं, जर्नल्स, समाचार पत्र (इंडिया टुडे आर्टिकल, 2025) जर्नल्स आधारित वेबसाइट को उपयोग में लाया गया है।

भारत, बांग्लादेश और चीन के बीच नदी डेटा साझा नीति का विश्लेषण

दक्षिण एशिया में चीन द्वारा नदी परिपथ के संबंध में डाटा साझा न करने से पूर्वी भारत और बांग्लादेश में प्राकृतिक आपदा जैसे बाढ़ से होने वाली हानि का खतरा बढ़ गया है क्योंकि नदी के संबंध में सूचना न होने से भारत और बांग्लादेश जैसे देश बाढ़ जैसी बड़ी प्राकृतिक आपदा के लिए तैयार नहीं हो पाते जिससे इन देशों को बाढ़ जैसी आपदा से होने वाली हानि में बड़ा भुगतान करना पड़ता। चीन से शुरू होने वाली ब्रह्मपुत्र नदी पूर्वी भारत के क्षेत्रों और बांग्लादेश से होकर गुजरती है। इस नदी में प्रतिवर्ष वर्षा सबसे अधिक लगभग 12193 मी.मी. तक होती है और सबसे कम वर्षा 1187 मी.मी. तक होती है।[9]

ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन में जून–अक्टूबर के दौरान वर्षा का डेटा

महीना	अधिकतम वर्षा (मी.मी.)	न्यूनतम वर्षा (मी.मी.)
जून	3116	202
जुलाई	3287	180
अगस्त	2152	198
सितंबर	1065	138
अक्टूबर	524	80

सारणी (भारत सरकार, जल शक्ति मंत्रालय, केंद्रीय जल आयोग, ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन के लिए च्डच् एटलस)

ब्रह्मपुत्र नदी और चीन–चीन से भारत आने वाली अन्य नदियों के संबंध में भारत और चीन के बीच एक समझौता ज्ञापन (MoUs) हुआ इसकी जानकारी जल संसाधन नदी विकास और गंगा संगठन मंत्रालय के अधिकारियों के द्वारा दी गई थी इस समझौते के तहत चीन प्रतिवर्ष 15 मई से 15 अक्टूबर तक भारत को ब्रह्मपुत्र एवं बराक नदी और अन्य नदियों के प्रवाह का डाटा साझा करेगा। भारत और बांग्लादेश के लिए मानसून के समय यह डाटा बहुत आवश्यक होता है जिससे बाढ़ जैसी स्थिति में बचाव योजना बनाई जा सके। परंतु चीन ने डोकलाम संघर्ष के बाद भारत से डाटा साझा करना बंद कर दिया जिससे भारत के लिए बड़ी समस्या उत्पन्न हो गई।[10] इससे स्पष्ट है कि चीन ने इस साधन को प्राकृतिक संसाधन के रूप में नहीं बल्कि एक राजनीतिक साधन के रूप में इस्तेमाल किया है।

विदेश मंत्रालय के अनुसार भारत सरकार के द्वारा 2015 से 2018 के मध्य पड़ोसी देश के साथ द्विपक्षी समझौते (MoUs) किए गए थे इसमें सबसे महत्वपूर्ण 2015 में सतलुज नदी और 9 जून, 2018 को ब्रह्मपुत्र नदी की हाइड्रोलॉनिकल जानकारी भारत को देने के लिए चीन सहमत हुआ था इसके अलावा भारत के द्वारा अन्य देश जैसे मालदीप, म्यांमार, श्रीलंका, नेपाल के साथ रक्षा, अंतरिक्ष, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे क्षेत्र में कई MoUs

द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए।[11] जब जल शक्ति मंत्रालय ने इंडिया टुडे द्वारा दायर एक आरटीआई में बताया कि भारत और चीन के बीच जो हाइड्रोलॉजिकल डाटा साझा (MoUs) समझौता किया गया था इस समझौते के तहत चीन भारत को नदी के प्रवाह का डाटा साझा करता था 2022 से भारत को नदी के प्रभाव का डाटा साझा करना बंद कर दिया।

यह उत्तर भारत के आपदा प्रबंधन हेतु बाढ़ की भविष्यवाणी सूचना के लिए बहुत महत्वपूर्ण था इसमें भारत को खासकर ब्रह्मपुत्र नदी और इसकी सहायक नदियों के संबंध में डाटा प्राप्त करना जरूरी था परंतु चीन में डाटा साझा न करके भारत के लिए एक बड़ी समस्या खड़ी कर दी क्योंकि बिना चीन की सहायता के ब्रह्मपुत्र नदी के जलस्तर का अनुमान लगाना काफी मुश्किल है। ब्रह्मपुत्र नदी पर (MoUs) समझौता गृह मंत्रालय के अनुसार 5 जून, 2023 को समाप्त हो गया था वही सतलुज नदी पर भी यह समझौता 6 नवंबर, 2020 को समाप्त हो गया था इसके बाद चीन ने भारत के साथ नदी से संबंधित डाटा साझा नहीं किया। ब्रह्मपुत्र नदी से संबंधित इस MoUs समझौते में भारत और चीन ने सबसे पहले हस्ताक्षर सन 2002 में किए थे इसके तहत् चीन को प्रत्येक वर्ष अक्टूबर के महीने में नदी के प्रवाह संबंधित रिपोर्ट साझा करनी थी। भारत और चीन के बीच ब्रह्मपुत्र नदी समझौते से संबंधित नवीनीकरण सन् 2008, 2013 व इसके बाद 2018 में किया गया था।[12] भारत के मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के अनुसार दैनिक वर्षा के आंकड़ों से पता चलता है कि 2 अगस्त से पहले एक हफ्ते में धनश्री नदी के मुख्य वर्षा वाले क्षेत्रों में असाधारण वर्षा नहीं हुई थी इसके बावजूद भी धन सिरी व दोयंग नदी पर आई अचानक बाढ़ का मुख्य कारण दोयंग नदी पर बना दिया बांध है यह दोयंग नदी ब्रह्मपुत्र नदी की एक सहायक नदी में से एक है यह 75 मेगावाट क्षमता वाला उद्योग जल विद्युत बांध है जिसे उत्तर पूर्वी विद्युत ऊर्जा निगम लिमिटेड द्वारा नियंत्रित किया जाता है। जिसमें बांध के खुलने से नदी का जल स्तर काफी तेजी से बढ़ गया और बाढ़ आ गई।

इस घटना में पांच लोगों की जान चली गई असम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के अनुसार आपदा में लगभग 120 गांव में 87300 लोग प्रभावित हुए। इस तरह पूर्वी भारत के क्षेत्रवासियों को भयानक कहानी का सामना करना पड़ा। भारत के पूर्वी राज्यों के लिए बाढ़ जैसी बाधा एक गंभीर समस्या बन गई है इस बाढ़ का मुख्य कारण वह नदियां हैं जो अंतरराष्ट्रीय सीमा पार करती है। जो सियांग नदी है जिसे चीन में ट्संगपो भी कहा जाता है यह ब्रह्मपुत्र नदी की मुख्य सहायक नदी है सियांग नदी ब्रह्मपुत्र नदी में लगभग 20 से 30 प्रतिशत पानी का योगदान देती है इसलिए ब्रह्मपुत्र नदी भारत की सबसे बड़ी नदी में से एक है जो दुनिया की नवीन सबसे बड़ी नदी है और 15वीं सबसे लंबी नदी है जिसका जलस्तर लगभग 9,800 घन मीटर प्रति सेकंड निरंतर रहता है। जिसके कारण पूर्वी भारत में बाढ़ आने की संभावना निरंतर बनी रहती है ऐसा माना जाता है कि हिमालय पर बने प्राकृतिक बांधों के टूटने से भारी मात्रा में पानी नदी में आ जाता है जो तेज ऊपरी लहरों का सबसे बड़ा कारण है। जिससे बाढ़ की संभावना और अधिक बढ़ जाती है।[13] चीन द्वारा जल डाटा साझा में कमी करने से पूर्वी भारत के राज्यों में बाढ़ जैसी समस्या से होने वाली हानि बड़े स्तर पर हो सकती है। क्योंकि नदी का डाटा साझा किये बिना बाढ़ का अनुमान लगाना काफी मुश्किल है। जो भारत की आपदा प्रबंधन प्रणाली के लिए बहुत बड़ी समस्या है।

भारत को इस ब्रह्मपुत्र नदी के संदर्भ में राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण परियोजनाएं लागू करने की आवश्यकता है इसके साथ–साथ उत्तर पूर्वी भारत की आपदा प्रबंधन प्रणाली व सूचना प्रणाली को मजबूत करने की आवश्यकता है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को वैश्विक मंचों जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ, ब्रिक्स और SCO आदि के सम्मेलनों पर नदी प्राकृतिक संसाधन के रूप में अधिकार के मुद्दे को उठाना चाहिए जिससे कोई भी देश किसी भी प्राकृतिक संसाधन पर अपना प्रभुत्व ना जमा सके जिससे निचले तटवर्तीय देश पर होने वाली गंभीर समस्याओं का समाधान हो सके। फिर जिससे निचले तटवर्ती देश पर होने वाली हानि कम हो सके जिसमें मानव सुरक्षा को खतरा न हो और किसान के खेतों की पैदा होने वाली फसलों भी बचाई जा सके।

निष्कर्ष

जल डाटा नियंत्रण केवल संसाधन प्रबंधन का प्रश्न नहीं है बल्कि यह 21वीं सदी की उभरती हुई का शक्तियों का महत्वपूर्ण राजनीतिक आयाम बनता जा रहा है। यह एक महत्वपूर्ण वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दा बन चुका है चीन द्वारा जल डाटा साझा में सहयोग सीमित और प्रतिबंधित है जो भारत और बांग्लादेश की आपदा प्रबंधन क्षमता और सुरक्षा मानव सुरक्षा को निरंतर नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही है। भारत और बांग्लादेश जैसे देशों के लिए इस समस्या का समाधान केवल तकनीक से नहीं बल्कि वैश्विक कुटनीति और संस्थागत मत प्रयासों से हो सकता है। भारत के लिए जल डाटा साझा नीति के संबंध में क्षेत्रीय सहयोग पारदर्शिता और विश्वास निर्माण बड़ा महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। ब्रह्मपुत्र जैसी सीमा पार नदियों के संबंध में ऊपरी तट वाले देशों पर निचले तटवर्ती वाले देशों के लिए निर्भरता बढ़ती जा रही है इसके परिणामस्वरुप अगर समय पर डाटा नहीं प्राप्त होता तो निचले तटवर्ती वाले देशों को काफी नुकसान का सामना करना पड़ता है।

अतः चीन, भारत की जल डाटा साझा बड़ी समस्या को अपने लाभ हेतु भी इस्तेमाल कर सकता है अर्थात् भारत को चीन द्वारा डाटा साझा न करना भारत के संबंध में चीन इसे अपने निजी हित नीति लागू को पूरा करने के लिए इसे वैश्विक राजनीतिक हथियार के रूप में भी इस्तेमाल कर सकता है। चीन द्वारा भारत को ब्रह्मपुत्र नदी और अन्य नदियों के संबंध में डाटा साझा न करने के संबंध नीतिगत का सुझाव इस प्रकार है–

- भारत और बांग्लादेश को चीन के साथ जल डाटा साझा समझौता लंबे समय के लिए करना चाहिए जिसमें वर्तमान डाटा साझा पारदर्शिता भी शामिल है।
- क्षेत्रीय सेवक बढ़ाना और मजबूत करना इसके साथ संस्थागत तंत्र के निर्माण को बढ़ाना चाहिए जिसमें सबसे महत्वपूर्ण पक्षीय मंचों के माध्यम से डाटा साझा को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए।
- वर्तमान तकनीक को आगे बढ़ना चाहिए जिसमें सैटेलाइट जैसी आधुनिक डाटा तकनीक को विकसित करना चाहिए ताकि ऊपरी तटवर्ती वाले देशों पर से निर्भरता को कम किया जा सके।
- भारत और बांग्लादेश सरकार को क्षेत्रवासियों के लिए स्थानीय स्तर पर कम्युनिटी बेस्ड वर्किंग सिस्टम को विकसित करना चाहिए ताकि बाढ़ आने से पहले उसकी चेतावनी सबको दी जा सके।

भारत सरकार द्वारा इन सुझावों पर ध्यान दिया जाए और अमल में लाया जाए तो मानसून के महीनो में भारत और बांग्लादेश में आने वाली बाढ़ से होने वाली हानि काफी हद तक कम हो सकती है। जिससे भारत और बांग्लादेश की सरकार और नदी के पास रहने वाले क्षेत्रवासी राहत की सांस ले सकेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Elhance, A.P. (1999). Hydropolitics in the Third World: Conflict and cooperation in international river basins. United States Institute of Peace Press.
   https://scholar.google.com/scholar?q=Hydropolitics+in+the+Third+World+Elhance
2. Ho, S. (n.d.). China water policy and water diplomacy (various works). Google Scholar search. https://scholar.google.com/scholar?q=Selina+Ho+China+water+policy
3. Malangmei, P. (2025). India-China Brahmaputra River Dispute: A legal framework based on international law. International Journal of Science and Research (IJSR), 14(??), 2319–7064. https://www.researchgate.net/publication/390133720_India-China_Brahmaputra_River_Dispute_A_Legal_Framework_Based_on_International_Law
4. Gupta, J. (2018, May 17). China resumes sharing Brahmaputra water flow data with India. Dialogue Earth. https://dialogue.earth/en/water/china-resumes-sharing-brahmaputra-water-flow-data-with-india/

5. Elhance, A. P. (1999). Hydropolitics in the third world: Conflict and cooperation in international river basins. United States Institute of Peace Press. https://books.google.com/books?id=4K-mVKLUQy0C

6. Zeitoun, M., & Warner, J. (2006). Hydro-hegemony: A framework for analysis of trans-boundary water conflicts. Water Policy, 8(5), 435–460. https://doi.org/10.2166/wp.2006.054

7. Ho, S. (2017). China's transboundary water politics and diplomacy (various publications on water governance and Mekong/Brahmaputra relations).

https://scholar.google.com/scholar?q=Selina+Ho+China+water+policy

8. Mirza, M.M.Q. (2011). Climate change, flooding and water-related disasters in South Asia. (Book/edited volume chapters and research work on South Asian hydrology and climate impacts). https://scholar.google.com/scholar?q=Mirza+climate+change+flooding +South+Asia

9. Central Water Commission. (n.d.). MP Atlases. Ministry of Jal Shakti, Government of India. https://cwc.gov.in/mp-atlases

10. Gupta, J. (2018, May 17). China resumes sharing Brahmaputra water flow data with India Dialogue Earth. https://dialogue.earth/en/water/china-resumes-sharing-brahmaputra-water-flow-data-with-india/

11. Ministry of External Affairs, Government of India. (n.d.). Bilateral documents.

https://www.mea.gov.in/bilateral-documents.htm

12. Upadhyay, A. (2025, May 28). Exclusive: China hasn't shared river data with India since 2022, RTI query reveals. India Today. https://www.indiatoday.in/india/story/china-has-not-shared-river-data-with-india-since-2022-rti-query-reveals-exclusive-2731993-2025-05-28

13. YaleGlobal Online. (n.d.). India-China water sharing data.

https://share.google/fckZfCp8hHXhZqHhD

❑❑❑